

# श्री हित मंगल गान



श्री हित प्रताप चंद्र गोस्वामी जी महाराज

श्री हित मन मोहन गोस्वामी जी महाराज

श्री हित निमिष गोस्वामी जी महाराज

© @shrihitradhavallabhlal

☎ 8168100515, 9890455777

www.shriradhavallabhlal.com



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

जै जै श्रीहरिवंश, व्यास-कुल-मंडना ।  
रसिकअन्यनि मुख्य गुरु, जन भय खंडना ॥  
श्रीवृन्दावन वास, रास रस भूमि जहां ।  
क्रीडत श्यामा-श्याम, पुलिन मँजुल तहां ॥  
पुलिन मँजुल परम पावन, त्रिविध तहां मारुत बहे ।  
कुंज भवन विचित्र शोभा, मदन नित सेवत रहै ॥  
तहां संतत व्यासनंदन, रहत कलुष विहंडना ।  
जै जै श्रीहरिवंश, व्यास-कुल-मंडना ॥१॥

जै जै श्रीहरिवंश-चन्द्र उदित सदा ।  
द्विज-कुल-कुमुद प्रकाश, विपुल सुख संपदा ॥  
पर उपकार विचार, सुमति जग विस्तरी ।  
करुणा-सिंधु कृपालु, काल भय सब हरि ॥  
हरि सब कलि काल की भय, कृपा रूप जु वपु धर्यौ ।  
करत जे अनसहन निन्दक, तिनहुँ पै अनुग्रह करयौ ॥  
निरभिमान निर्वेर निरुपम, निष्कलंक जु सर्वदा ।  
जै जै श्रीहरिवंश-चन्द्र उदित सदा ॥२॥



श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)





!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

जै जै श्रीहरिवंश, प्रशसित सब दुनी ।  
सारासार विवेकित, कोविद बहु गुनि ॥  
गुप्त रीति आचरन, प्रगट सब जग दिये ।  
ज्ञान-धर्म-व्रत-कर्म, भक्ति-किंकर कीये ॥  
भक्ति हित जे शरण आये, द्वंद दोष जु सब घटे ।  
कमल कर जिन अभय दीने, कर्म-बंधन सब कटे ॥  
परम सुखद सुशील सुंदर, पाहि स्वामिनि मम धनी ।  
जै जै श्रीहरिवंश, प्रशसित सब दुनी ॥३॥

जै जै श्रीहरिवंश, नाम-गुण गाइ है ।  
प्रेम लक्षणा भक्ति, सुद्रढ करि पाइहै ॥  
अरु बाढे रसरीति, प्रीति चित न टरे ।  
जीति विषम संसार, कीरति जग विस्तरै ॥  
विस्तरै सब जग विमल कीरति, साधु-संगति न टरै ।  
वास वृन्दाविपिन पावै, श्रीराधिका जु कृपा करै ॥  
चतुर जुगल किशोर सेवक, दिन प्रसादहि पाइ है ।  
जै जै श्रीहरिवंश, नाम-गुण गाइहै ॥४॥

-- रसिक भूषण संत श्रीहित सेवक जी महाराज कृत --



श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)





!! श्री हित राधा बल्लभो जयति !!  
!! श्री हित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## || बधाई गान ||

मधुरीतु माधव मास सुहाई |

भाग प्रकाश व्यास नन्दन मुख , फूल्यौ कमल अमल छबि छाई ||  
श्रवत मधुर मकरंद सुयश निज , कुंज-केलि-सौरभ सरसाई |  
सेवत रसिक अनन्य भ्रमर मन , 'कृष्णदास' सुख सार सदाई ||

## || गुरु वंदना ||

नमो नमो जय श्रीहरिवंश |

रसिक अनन्य वेणु कुल मंडन, लीला मान सरोवर हंस ||  
नमो जयति श्रीवृन्दावन सहज माधुरी, रास विलास प्रशंस ||  
आगम-निगम अगोचर राधे, चरण सरोज व्यास अवतंश ||

-- रसिकवर श्री हरिराम व्यासजी कृत --

## || श्री सेवकचरण वंदना ||

प्रथम श्रीसेवक पद सिर नाउ,  
करहु कृपा श्री दामोदर मोपै, श्रीहरिवंश चरण रति पाउ ||  
गुण गंभीर श्री व्यासनंदनजू के, तुव परसाद सुजस रस गाउ |  
नागरीदास के तुमही सहायक, रसिक अनन्य नृपति मन भाउं ||

-- रसिकवर श्री नागरीदास जी कृत --



श्री हित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्री हित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)

